mit B weggelassen. — Z. 31. Nach प्रभाव: findet sich die Str. काएँ श्रीप्रूषात्तमस्य nur in b u. den Ausgg., scheint daher ein späterer Zusatz zu sein. - S. 301, Z. 24. Nach भणादि ist die Stelle: उमस्स बम्हणस्स bis एवं भणादि, die sich nur in do und den Ausgg. findet, getilgt. — S. 302, Z. 1. Ebenso nach ट्वाइटवं ति die Worte: हाजा। 5 म्रस्ति का चिख्नक्तिः। विद्र ° (48 CNJ). — Z. 17. Nach गाधिकेयम् Δ und Ausgg. किं गधिम्रा। तदे। किं किन्धा (d किन्धं)। राजा। वयस्य। कयापि . Mit B weggelassen. — S. 303, Z. 25. म्रतिराम्री st. म्रतिर्हा in den Hdschrr. u. Ausgg., wie 306, 30. — Z. 33. म्रवि मुक्मदि दे एमा लोम्रणाउँ ण वा st. म्रवि मुक्मिदि (alle Hdschrr. u. Ausgg.) दे लोम्रणं (BC), ॰णं (TM), ॰णाउं (bठ), ॰णाणं (DठNJ), ण वेत्ति (Δ u. Ausgg., B om.). — 10 S. 304, Z. 1. ेरिति जं सद्यं mit D. Vgl. den ganz ähnlichen Gebrauch von इति पत्स-구막되 304,12. 323,19. MŖŔŔĦ. 23,25. — Z. 17. 벡 (B) feblt in Δ u. den Ausgg. — S. 306, Z. 2. पम्राविरणो st. वर्णो der Hdschrr. u. Ausgg. णिम्मिम्र mit B st. णिम्मिवम (Δ), गिम्माविम्र (CNJ), गिम्माउम्र (TM). — Z. 25. बोलउस्मं (lies बोह्न° und vgl. Hεм. IV,2) Alle ausser B, wo Z. 23—26, und b, wo Z. 21—26 fehlt. Dagegen बाह्यामा Мहккн. 105, 15 16. — S. 308, Z. 5. बम्क्तपोपा st. ेतपोपा (D), बम्क्स्तेपा (dð, Ausgg.), बम्क्पास्स चलपोपा (B), °पास्स पार्स (b). — Z. 29. पा वा st. पा वित्त (B), पा वित्त (A u. Ausgg.). Vgl. zu 303,33. — S. 310, Z. 15. सर्वस्याये क्रांत st. ृस्यामा क्रांत (B), ृस्याधा नयति (△CTM), °स्याग्रे नयति (NJ). — S.314, Z.25. Lies म्रज्जउत्तरस. — S.315, Z.4. समा-त्रुडिप्रीति: (B8) st. ° 61 प्रीति: (Dd u. Ausgg.). Vgl. Unv. Str. 10. — Z.23. Vgl. Макки. 52,19. 20 Nagan. 75,19. — S. 318, Z. 6. माम्राविम्र st. मार्म्स (B), माम्रविम्र (b), माचिम्र (D), माचिम्र (do

20 NAGAN. 75,19. — S. 318, Z. 6. मोम्राविम्र st. मोर्झ (B), मोम्राविम्र (b), मुचिम्र (D), मोचिम्र (dδ u. Ausgg.). — S. 319, Z. 20. Die Worte: भा वम्रस्स । देवीए म्रणुग्गिक्दोम्कि (nur b u. Ausgg.) scheinen interpolirt. — S. 321, Z. 29. इन्द्मालम्मि लहणामस्स mit B gegen इन्द्मालिम्रपिणाहणामस्स (Δ) und इन्द्मालिम्रति लहणामस्स (Ausgg.). — Z. 30. So st. तक् म्रज्ञसंवरस्स माम्रासुपरिद्मिजनस्स (B), तस्स संवरस्स माम्रासुपदित्थणभस्स (b), तक्

25 म म्रज्ञसंवर्ग्स विवर्ग्स मुपरिद्धि॰ (D), तक जेव्व म्रज्ञ॰ weiter wie D (d), तक एव्व म्रज्ञसंवर्ग्स विवर्ग्स मुपरिद्धि॰ (δ), तक जेव्व म्रज्ञसंवर्ग्स विवर्ग्स मुपरिद्धि॰ (С), तक जेव्व मंजर्गावर्ग्स मुपरिद्धि॰ (С), तक जेव्व मंजर्गावर्ग्स मुपरिद्धि॰ (ПМ), तक जेव्व म्रज्ञसंवर्ग्स माम्रामुपरिद्धि॰ (ПМ), — Z. ३२. दाविज्ञउ (Сопј. von Garrez, Journ. asiat. XX, p. 204) st. सविसज्जउ (B, b unleserl.), दाणिङ्जइ (Δ), दाविज्ञइ (dδ), दाव सिज्जउ (Ausgg.). — S. 324, Z. 15—17 in dieser kürzeren

30 Fassung, wie sie der Situation allein entspricht, nach B und Daçarûp. S. 41, während bΔ und die Ausgg. den Vasubhûti ganz mit Jaugamdharájaņa's Worten (327,33. 328,1. fgg.) reden lassen. — Ebenso Z. 21. fg. kürzer mit B gegen bΔ u. Ausgg. — S. 325, Z. 22. प्रोवरेसओ st. पन्थावरेसओ (B) und प्रयावरेसओ (Δ u. Ausgg.). b. 封壳